रात का गीत (1 जनवरी)

भजन संहिता 95:6 आओ हम झुक कर दण्डवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें!

जब हम एक बार दिव्य योजना के द्वारा, दिव्य चरित्र के महिमा की झलक पा लेते हैं, जब हम एक बार हमारी समझ की आँखों के द्वारा परमेश्वर केवल जिनसे हमारा नाता है, उनका सच्चा रूप देख लेते हैं, ये जान लेते हैं कि वे महान हैं, हृदयों को खोजनेवाले हैं और अपनी कलीसिया की देखभाल करनेवाले हैं, हम उस परमेश्वर के सामने मिट्टी के जैसा नम्र होकर झुक जाते हैं और ये महसूस करते हैं कि, हम अपरिपूर्ण हैं, ये भी कि हम हमारे स्वामी प्रभु यीशु के सामने खड़े भी नहीं हो सकते और ये कि हम उनकी कृपा और आशीषों के लिए अयोग्य हैं। लेकिन उन्होंने जैसे कोमलता से यूहन्ना को छुआ, उसे ऊपर उठाया, उसी तरह उन्होंने हमसे भी विश्राम, शान्ति और प्रेम की बातें की हैं। वे हमें ये आश्वासन देते हैं कि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सकें, बल्कि इसके विपरीत वो एक ऐसे महायाजक हैं जो हमारी निर्बलताओं में हमसे सहानुभूति रखते हैं और दयापूर्वक हमारी मदद कर सकते हैं। एक ऐसा महायाजक जिसने हमें अपने बहुमूल्य लहू से ख़रीदा है, जिसने हमें ग्रहण किया है और जब तक हम उसमें बने रहेंगें और हमारे हृदय से उनकी इच्छा को करने का प्रयत्न करेंगें, तो वो हमारी गिनती अपनी देह के सदस्यों में करेंगें। Z'05-169 R3569:6 (Hymn 69) आमीन

रात का गीत (2 जनवरी)

इफिसियों 5:8 क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की तरह चलो।

प्रभु यीशु मसीह हमें बताते है कि, यदि हम रोशनी (सच्चाई) के प्रति वफादार हैं तो हमारी रोशनी हमारे स्वर्ग के पिता की प्रशंसा में आगे चमकनी चाहिए। वह हमें पहले से ही सचेत करते हैं कि, बहुतों को उनके अच्छे कार्ये के लिए प्रशंसा नही मिलेगी, बल्कि हर रीती से झूठी बुराई ही मिलेगी, प्रभु यीशु के नाम के वास्ते वह हमें यह बताते हैं कि, अन्धकार के बच्चे रोशनी के बच्चों से बैर रखते हैं। पर वह हमें यह चेतावनी देते है कि, इन सभी अनुभवों में हमें आनन्दित रहना चाहिए क्योंकि हमारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। परमेशवर के बच्चों की यह भावना रहती है कि, वे परीक्षाओ और संकट में भी आनन्दित रहेंगे। जैसे जैसे वह रोशनी और सच्चाई को चमकने देंगे, अच्छे दिल वालों के सामने जो भी गलतियां है, वे जरूर प्रगट होंगी । Z'15-201 R5719:4 (Hymn 275) आमीन

रात का गीत (3 जनवरी)

यूहन्ना 4:14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा …।

भटकाव, झूठ; अस्थायी रूप से उन लोगों की लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं जिन्होंने अभी तक सत्य यानि जीवन के जल के स्वाद को बिलकुल नहीं चखा है। लेकिन सच्चाई को छोड़कर और कुछ भी नहीं है जो स्थायी रूप से, चिरस्थायी संतुष्टि दे सकता है और हमारे प्रभु आप ही वचन हैं, लोगोस हैं, पिता की वाणी हैं, अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण हैं; वे जीवन के इस संतोषजनक जल के प्रतिरूप और प्रतिनिधि हैं। जो कोई भी प्रभु को अपना छुड़ाने वाला और प्रधान और गुरु के रूप में ग्रहण करता है, जिनके द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से भरे सारे वादे पूरे होंगे, जो कोई भी इस जीवन के जल को पाता है, वो कभी प्यासा न होगा और न ही वो अन्य दिशाओं में सच्चाई को ढूंढ़ते हुये पाया जायेगा। ये उसकी प्यास को इस तरह से तृप्त कर देगी जैसा कि और कोई नहीं कर सकता और इतने अधिक मात्रा में उसकी प्यास को तृप्त कर देगी कि उनमें परदेश के पानी के लिये प्यास ही न रहेगी। Z'99-27 R2424:2 (Hymn 146) आमीन

रात का गीत (4 जनवरी)

अय्यूब 23:10 परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूँ...।

यघपि इस सकेत मार्ग में जैसे जैसे हम आगे बढ़ते हैं उतना ही शैतान के आक्रमण का निशाना ज्यादा बनते हैं और हमारी आशा, विश्वास और प्रेम की ज्यादा कड़ी परिक्षा होती है, फिर भी हमारा आत्मिक आनन्द बढ़ता जाएगा, जिसकी तुलना न हो सके वो शान्ति बढ़ती जायेगी और हम इस योग्य बनते जायेंगें की परिक्षाएं और ताडनाओं में भी हम आनन्दित रह सकें, ये जानकर की ये सभी दुःख हमारे लिए

इससे कहीं ज्यादा बड़ी और अनन्त महिमा लेकर आयेंगें। हम सहने के लिए योग्य बनते जायेंगें; जो अदृश्य है उसे देखते रहेंगें, और उसी का हाथ हमें थामे रहेगा और हमारा मार्गदर्शन करेगा। हर परेशानी में हमारे पास उनका वादा होगा कि, वे हमारे साथ हैं। वे हमें न कभी छोड़ेगें और न कभी त्यागेंगें। और वो सक्षम हैं कि सभी बातों को (बुरी भी दिखनेवाली जीवन की बुराइयों को) हमारे सर्वोत्तम भलाई के लिए अपने वश में कर लें, क्योंकि ---

1) हम परेमश्वर और उनके मार्गों से प्रेम करते हैं;

2) हम उनकी योजना से खुद से और खुद के मार्गों से भी ज्यादा प्रेम करते हैं,

3) क्योंकि हम उनके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बुलाये गए हैं और हमने इस बुलावे को स्वीकार किया है।

4) उनकी योजना से जुड़े सभी लक्ष्यों/बातों/विषयों/वस्तुओं से हम सहानुभूति रखते हैं,

5) हम भरसक प्रयत्न कर रहे हैं ताकि प्रभु और उनके बुलावे के योग्य चाल चल सकें, और

6) इस तरह से अपने बुलावे और चुनाव को पक्का कर सकें।

Z'95-3 R1751:3 (Hymn 99) आमीन

रात का गीत (5 जनवरी)

रोमियो 6:23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

यद्यपि हमारे स्वर्गीय पिता हमें या हमारी शंतान को दुःख, पीड़ा और मृत्यु से छुटकारा देकर प्रसन्न नहीं होंगें, हालाँकि फिर भी उन्होंने मसीह के द्वारा एक आलिशान और ज्यादा महिमा वाला प्रबन्ध किया है--हमारे लिए अनन्त जीवन का प्रबन्ध किया है। लेकिन यह तोहफा उनके लिए आरक्षित है जो अभी या भविष्य में कुछ ख़ास चरित्रों को उत्पन्न करेंगें और उन्हीं चरित्रों का उदाहरण बनकर प्रदर्शित करेंगें। ये मुख्य चरित्र है--उदारता, विश्वास, प्रेम--परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति। जिन लोगों की समझ की आँखें और कान परमेश्वर के अनुग्रह से अभी के समय में खुल रही हैं, वे लोग धन्य हैं। वे इन आँखों से परमेश्वर के अनुग्रह को देख पायेंगें, समझ पायेंगें और उसकी कदर कर पायेंगें। परमेश्वर के अनुग्रह की सही कदर करने के लिए हम जो अभी मसीह की पाठशाला में हैं, हमें आत्मा के फलों और अनुग्रहों के फलों को बढ़ाना है, हमारे प्रभु की समानता में बढ़ना है, क्योंकि वैसे लोगों को ही राज्य मिलेगा, साँझा वारिस होंगें और आशीषें मिलेंगी और न केवल अनन्त जीवन का अधिकार मिलेगा, बल्कि मसीह के साथ साँझा वारिस भी होंगें। हज़ार साल के राज्य में पूरी मानवजाति को अनन्त जीवन पाने के काबिल बनने के लिए, उन्हें भी आत्मा के फलों और प्रभु की आत्मा के अनुग्रहों को बढ़ाना होगा। पुत्र बनना मतलब मसीह की समानता में होना है। जो भी पुत्र बनेगा उसी को अनन्त जीवन मिलेगा और किसी को नहीं। Z'04-285 R3432:6 (Hymn 235) आमीन

रात का गीत (6 जनवरी)

भजन संहिता 139:3 मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।

जिस सकेत मार्ग पर प्रभु यीशु मसीह के पद चिन्हों पर चलने वाले संत चलते हैं, वह मार्ग कितना सकरा है! हर कदम पर स्वंय से इन्कार करना है, परन्तु प्रभु यीशु ने कहा, "जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं"। इसलिए, यदि हम प्रभु यीशु की निन्दाओं और 'स्वंय से इन्कार' में उनके सहयोगी नहीं होंगें तो हम प्रभु के लिए अपने प्रेम को साबित नहीं कर सकते। और यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम उस समूह के नहीं जिसे वे अपनी दुल्हन बनाना चाहते हैं। अन्त तक सहते रहना किसी के लिए भी आसान नहीं है, पर धन्य है वह जो यह करता है। यदि हम पीछे की वस्तुओं को देखते रहें, पुराने लक्ष्यों पर उत्सव मनाते रहें, संसार की पुरानी आत्मा को प्रोत्साहन देते रहें जिसने कभी हमें धकेल दिया था (पाप और मरण में), हमारी योग्यता की परीक्षाओं में धैर्य रखना ज्यादा मुश्किल होता जायेगा, यदि असम्भव न भी हो तो। इसलिए आओ हम हमारे प्रेरित के सुझाव के अनुसार, जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की और बढ़ते हुए दुनिया और शरीर पर जय पाएं। Z'87-Jan., p.3 R901:6 (Hymn 12) आमीन

रात का गीत (7 जनवरी)

रोमियो 13:12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।

आपने जो रोशनी अभी पाई है उस पर ध्यान करें - परमेश्वर के ज्ञान की, उनकी इच्छा की, किस लिए जीना है और जिनको पिता अनंत जीवन का पुरस्कार देकर बहुत प्रसन्न होंगे, जो कि उच्चतम जीवन का रूप है, उनके चरित्र कैसे होने चाहिए की रोशनी। इस ज्ञान को कवच की तरह पहन लो ताकि ये तुम्हारी रक्षा कर सके। यह जानने के बाद की परमेश्वर को क्या चाहिए, इसको कवच की तरह धार्मिकता की चद्दर के ऊपर पहन लो। धार्मिकता की झीलम को पहन लो ताकि यह ह्रदय को ढक सके, यह महसूस करें की ह्रदय की शुद्धता और परमेश्वर के प्रति पूरी वफादारी बहुत जरूरी है। यह अनुभव करें कि परमेश्वर हमारी ओर हैं। आत्मा की तलवार, परमेश्वर के वचन, और हर वह चीज़ जिसकी चर्चा प्रेरितों ने की है, को ले लो। यह सब मिलकर “ज्योति के हथियार” का गठन करती है, क्योंकि इन्हें हम सच्चाई की रोशनी से प्राप्त करते हैं। Z'15-282 R5770:1 (Hymn 164) आमीन

रात का गीत (8 जनवरी)

उत्पत्ति 24:58 सो उन्होंने रिबका को बुला कर उससे पूछा, क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी? उसने कहा, हां मैं जाऊंगी।

यह वचन मसीह की दुल्हन होने के लिए बुलाये गए लोगों के सामने आनेवाले सवाल का अच्छी तरह से प्रतिनिधितत्व करता है। वे यह सुनते हैं की केवल प्रभु यीशु ही "परमेश्वर के एकलौते पुत्र हैं, अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण"। वे सुनते हैं की प्रभु यीशु सब के प्रभु हैं, और "बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाओं" के वारिस हैं। वे सीखते हैं कि उनके साथ मिलन का मतलब होगा, हमेशा के लिए प्रभु के साथ संगती का सुख और उनके महान और अद्भुत भविष्य में उनके साथ भागीदारी। इस तरह के लोग ही "हां मैं जाऊंगी" का सही उत्तर देते हैं, जैसा की रिबेका ने तत्परता के साथ दिया था। केवल प्रभु के प्रति संपूर्ण ह्रदय से किया गया प्रेम और एक अच्छी नींव पकड़ा हुआ विश्वास ही ... अंत में हमें हमारे अति प्रिय, महिमा के राजा के साथ, महिमा में स्वीकार किए जाने की आशा में हर्षित होते हुए, हमें यात्रा के अंत तक ले जाएगा। Z'13-60 R5188:1 (Hymn 87) आमीन

रात का गीत (9 जनवरी)

मत्ती 4:10 तब यीशु ने उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।

40 दिन के वनवास में हमारे प्रभु यीशु मसीह ने यह समझ लिया था कि धरती पर राज्य केवल बड़े दुःख उठाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। वे 40 दिन के उपवास के बाद शारीरिक रूप से निर्बल हो गए थे और सभी भविष्यवाणियां उनके दिमाग

में सामने में थी (तरोताजा थी)। जब वनवास के समय साँप उठा, तो उन्होंने खुद को काटनेवाले के सामने एक गूँगा मेम्ने की तरह देखा (मतलब जब साँप उनकी परिक्षा के लिए आया, तो जो भविष्यवाणियां थी, उसके हिसाब से प्रभु यीशु मसीह एक भोले-भाले चुप रहने वाले मेम्ना बनकर आए थे, जिन्हें वध होना था, और उन्हें अपने सतानेवाले के सामने चुप रहकर सहना था), शैतान (साँप) के सुझाव लालसा की तरह थे, लेकिन सोच--विचार करने के बाद प्रभु यीशु ने देखा कि शैतान उनकी वाचा को तोड़कर उनसे परमेश्वर की इच्छा का विरोध कराना चाहता है। उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया, है शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: 'तू अपने प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'। तब शैतान उन्हें छोड़कर चला गया, क्योंकि उसके पास करने को कुछ भी नहीं बचा था, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर यहोवा के वचनों के प्रति बहुत वफ़ादार थे। बाद में स्वर्गदूतों ने आकर प्रभु यीशु की सेवा की। Z'12-262 R5084:6 (Hymn 200) आमीन

रात का गीत (10 जनवरी)

भजन संहिता 71:16 मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊंगा, मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा किया करूंगा॥

दुनिया, शरीर और शैतान के विरुद्ध झगडे में आंसुओं का, और पीड़ाओं का और संघर्षों का - इन सभी का होना अभी के समय में बहुत जरुरी है; और हमें ऐसे अनुभवों से गुज़रे बिना न तो जयवंत के रूप में मुकुट पहनने की आशा करनी चाहिए और न ही उम्मीद करनी चाहिए। इस युद्ध में हम सीखते हैं कि, जैसा

समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; हम अपनी कमजोरियों और अपरिपूर्णताओं के बारे में सीखते हैं और यह सीखते हैं कि, यदि हम अपने धार्मिकता के वस्त्रों को संसार से निष्कलंक रखना चाहते हैं, तो हमें प्रभु के साथ निकटता से चलने की आवश्यकता है। हम परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करना भी सीखते हैं और यह सीखते हैं कि "हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है"। हम सीखते हैं कि "जो हमारी ओर हैं, वह उन सभों से जो हमारे विरोधी हैं, बड़े हैं"। हम सीखते हैं कि, वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है, वह न तो हमारे शरीर के बल और इसकी परिपूर्णता से मिलती है और न ही हमारे मन के मजबूत संकल्प के कारण मिलती है, बल्कि उनकी मदद और मजबूती के द्वारा मिलती है, जिन्होंने हमें यह आश्वासन दिया है कि, उनकी सामर्थ्य हमारी निर्बलता में सिद्ध होती है। यहाँ पर हम यह सीखते हैं कि, जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं। Z'97-227 R2195:2 (Hymn 266) आमीन

रात का गीत (11 जनवरी)

भजन संहिता 73:24 तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुवाई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा।

परमेश्वर के विनम्र और उनपर विश्वास करनेवाले बच्चे यह महसूस करेंगें की, हालाँकि वे सब समय प्रभु के सारे बर्ताव में उनके सभी तरीकों को समझने में सक्षम

नहीं हो पाते हैं, लेकिन वे प्रभु के ज्ञान, प्रेम और देखभाल को जान पाते हैं, और इसीलिए जब वे प्रभु को ढूंढ़ नहीं पाते तब भी भरोसा कर सकते हैं। हमें हमेशा यह समझने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि दिव्य ज्ञान, जो हमारी अपनी समझ से परे है, हम इसे समझने में सक्षम होंगे; फिर भी, हम अक्सर इसे बाद में देख सकते हैं। कभी-कभी परमेश्वर का अनुशासन गंभीर हो सकता है, और किसी भी तरह से सहन करना आसान नहीं होता है, फिर भी, बाद में "चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है"। कड़वे के बाद मीठा आता है; इसीलिए आइये हम कड़वे को धैर्यपूर्वक ले लें; और जो लोग सुकर्म में धीरज रखते हुए स्थिर रहते हैं - परमेश्वर की सम्मति के साथ उनके मार्गदर्शन में, बिना किसी संकोच के परमेश्वर के प्रबंधों के निमित्त पूरा समर्पण करते हैं, उनके लिए बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के उचित समय में निश्चय पूरा होने की आशा में आनंदित रहें। Z'93-232 R1562:2 (Hymn 242) आमीन

रात का गीत (12 जनवरी)

भजन संहिता 40:10 मैं ने तेरा धर्म मन ही में नहीं रखा; मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किए हुए उधार की चर्चा की है; मैं ने तेरी करूणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रखी।

अगर जीवन में बाकि सब कुछ हमसे छीन लिया जाये, और हम इस संसार में एक पैसे के भी बिना हो जाएँ, तब भी यदि हमारे पास सत्य है

तो हम परमेश्वर की ओर धनी होंगे। और इसीलिए हम सभी सत्य से सम्बंधित बुद्धि और ज्ञान के जरूरतमंद हैं। जब हम यह महसूस करते हैं कि, हम कैसे अलग हो सकते हैं परमेश्वर की प्रशंशा करने में, जिन्होंने हमें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है। तो, फिर, परमेश्वर ने इस मामले को इस तरह से व्यवस्थित किया है कि, जो लोग विश्वास करते हैं और परमेश्वर के बच्चे बन जाते हैं, वे परमेश्वर के साथ उनके महान कार्यों में सहभागी होते हैं। और जब से हम इन चीजों को जानते हैं, वे परमेश्वर के प्रति हमारी वफादारी और हमारे प्रेम की परिक्षा का विषय हो जाते हैं। और हम में वफादारी और प्रेम का ये चरित्र है या नहीं, इसको देखने वाले प्रभु यह तय करेंगे कि हम परदे के दूसरी ओर, परमेश्वर के प्रतिष्ठित कार्य में सहयोगी हो पायेंगे या नहीं। `Z'13-315` R5335:4 (Hymn 275) आमीन

रात का गीत (13 जनवरी)

यूहन्ना 15:8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।

प्रभु ने खुद को सच्ची दाखलता कहा और अपने पिता को सच्चा किसान कहा है, जिन्होंने सच्ची दाखलता को रोपा है, और उनके चेलों को उस

दाखलता की सच्ची डालियों के रूप में कहकर घोषित किया है। इस वचन में "सच्ची दाखलता" का शब्द यह सुझाव देता है कि एक झूठी दाखलता भी है, और प्रभु अपने लोगों को प्रकाशितवाक्य के चिन्हों के द्वारा दिए गए अंतिम संदेशे में झूठी दाखलता होने के इस विचार पर जोर देते हैं और विस्तारपूर्वक इसका वर्णन करते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रभु "पृथ्वी की दाख लता" के फल को इकठ्ठा करने की बात करते हैं, और उसको इस युग के अंत में परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डालने की बात करते हैं। (प्रकाशितवाक्य 14:19) इसलिए, हमारे प्रभु के वचनों में “सच्ची दाखलता” का एक गहरा अर्थ था, जिसे उस समय शायद ही प्रेरितों ने समझा होगा। हम जो एक ऐसे समय में रह रहे हैं जब पिता के द्वारा रोपी गयी सच्ची दाखलता और पृथ्वी की झूठी दाखलता दोनों बढ़ रही है, हमारे पास इस बात पर ध्यान देने का अवसर है कि पृथ्वी की दाखलता स्वर्गीय दाखलता की तुलना में जाली है। जिस अनुपात में हम इस मामले को स्पष्ट रूप से देखते हैं, यह हमें न केवल प्रभु यीशु के दृष्टांत को समझने में, बल्कि हमारे दैनिक जीवन में इसे लागू करने में भी हमारी सहायता करेगा। इस प्रकार से हम झूठी दाखलता या झूठी शाखाओं या झूठे सिद्धांतों की गलतफहमी में आने के या गलत अर्थ लगाने के या धोखे में आने के कम खतरे में रहेंगे, क्योंकि यह दिव्य किसान की देखभाल के अधीन नहीं है। `Z'05-121` R3544:2 (Hymn 70) आमीन

रात का गीत (14 जनवरी)

याकूब 1:19 हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो: इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीरे और क्रोध में धीमा हो।

चरित्र की जो शक्ति क्रोध की अनुमति देती है, वो वही शक्ति है जिसे यदि दूसरी दिशा में मोड़ा जाए तो वह प्रेम की तीव्रता को प्रकट करती है। उचित कारणों के होते हुए भी क्रोध करने में असक्षम होना चरित्र की अपरिपूर्णता, दोषों को दर्शाएगा; जैसे दृढ़ता से प्रेम करने में असमर्थता उसी प्रकार से चरित्र में दोष को दर्शाएगी। हम जिन्हें पवित्र आत्मा से उत्पन्न किया गया है और जिनके पास इस प्रकार से, "मसीह का मन" है, यह वैसा मन या स्वभाव है जो हमें हमारे साथियों की ओर स्नेहमय, उदार, दयालु और क्षमा करनेवाला बनाता है और यह हमें परमेश्वर के प्रति श्रद्धावान और आज्ञाकारी बनाता है। यह वह आत्मा या स्वभाव है, जो पिता और पुत्र का है: जो स्वभाव या आत्मा इसके विपरित होती है, वह विरोधी शैतान की होती है। ये दो आत्माएं या स्वाभाव इतने विपरित हैं कि दोनों एक साथ हममें वास नहीं कर सकते -- हम परमेश्वर और धन, या मसीह और अधम पुरुषों दोनों की सेवा नहीं कर सकते हैं। `Z'07-26` R3928:2,4 (Hymn 49) आमीन

रात का गीत (15 जनवरी)

लूका 6:12 और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।

वह कौन होगा जिसने इस बात पर ध्यान न दिया होगा कि बाईबल के सभी महान चरित्रों में जिन्हें परमप्रधान ने उपयोग में लाया था, उन सबकी यह आदत थी कि वे लोग हर मामले में मार्गदर्शन पाने के लिए नित्य प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाया करते थे? यहाँ तक कि महान उद्धारकर्ता जो कि, पवित्र, निष्कपट, निर्मल और पापियों से अलग थे, उन्हें भी पिता से प्रार्थना करने की आवश्यकता थी--उन्हें भी पिता की संगति और उनके साथ बातचीत करने की आवश्यकता थी और उनके लिए भी यह आवश्यक था कि, वे अनन्त पिता के साथ सम्पर्क में रहें। कोई यह सवाल पूछ सकता है कि, क्या हमारी याचना को सुनकर परमप्रधान अपनी योजनाओं को बदल देंगे? निश्चित रूप से, वे नहीं बदलेंगे। वास्तव में, इसके विपरीत, पवित्रशास्त्र में हम यह चेतावनी दी गयी है कि हमें केवल परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही मांगना है। हमें ये चेतावनी दी गयी है कि यदि हम बुरी इच्छा से मांगेंगे तो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया जाएगा। इसलिए यह आवश्यक है कि, हम परमेश्वर के वचनों का अध्यन्न करें और इस प्रकार से दिव्य योजना को ज्यादा रोशनी में जान पाएं और इसके हर एक पहलू से परिचित हो जाएँ, ताकि हमारी याचनाएं परमेश्वर की

इच्छा और उनकी योजना के हर पहलू से तालमेल रखती हुई हो और हमारी याचनाओं के उत्तर के द्वारा हम बल और प्रोत्साहन पाएं। `Z'11-411` R4913:2 (Hymn 239) आमीन

रात का गीत (16 जनवरी)

व्यवस्थाविवरण 33:27 अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है, और नीचे सनातन भुजाएं हैं।

पवित्रशास्त्र इन गवाहियों से भरा हुआ है कि, निकट भविष्य में होनेवाली कठिन परिक्षाएँ धोखे के साथ होंगी। पवित्रशास्त्र हमें झूठ बोलनेवाले दूतों के बारे में और अधर्म के सब प्रकार के धोखे के बारे में और झूठे "चिन्हों" के बारे में बताता है और यह भी बताता है कि परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेंगें ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। यदि हम इस मामले को सही तरीके से समझ जाएँ, तो जानेंगे कि इन धोखों से पूरा संसार प्रभावित होनेवाला है, इसमें बुद्धिमान लोग भी शामिल हैं, और वास्तव में "अत्यन्त चुने" हुओं को छोड़कर, व्यवहारिक तौर पर सभी लोग इन धोखों से प्रभावित होंगें। और ये "अत्यन्त चुने" हुए लोग अपनी बुद्धि या श्रेष्ठता की वजह से नहीं बचाए जाएंगे, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ्य इनकी सुरक्षा करेगी। `Z'09-123` R4379:3 (Hymn 304) आमीन

रात का गीत (17 जनवरी)

भजन संहिता 37:7 यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर

जब हमारी धीरज से लम्बे समय तक सहने की परीक्षा हो, तो हमें निराश नहीं होना है, और न ही हमारे विश्वास को लड़खड़ाने देना है, फिर भले ही हम बाहरी तौर पर जिस शांति और चैन की चाहत रखते हैं, वह हमें लम्बे समय तक न मिले। जब ऐसा लगे की हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने में देरी हो रही है, तब भी हमारे पिता हमें भूले नहीं हैं। बाहरी तौर पर शांति और सुकून मिलना नई सृष्टि के रूप में हमारी आवश्यकताओं के लिए हमेशा सर्वोत्तम नहीं होता है; और जिन परिस्थितियों में आत्मा के बहुमूल्य फलों की बढ़ोतरी और उन्नति न हो सके, हमें वैसी परिस्थितियों की चाहत नहीं रखनी चाहिए। इसलिए, "जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझ कर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर आनन्द करो (1 पतरस 4:12,13)";वह जो हमारे सिर के बालों को भी गिनते हैं, वह अपने सबसे कमजोर और दीन बच्चे के प्रति उदासीन नहीं रह सकते हैं। अहा! इस प्रकार के प्रेम और सदा बने रहने वाली देखभाल का अहसास कितना सुखद है! "जब परमेश्वर हमें चैन देते हैं, तो कौन हमें परेशान कर सकता है?" `Z'15-345` R5802:6 (Hymn 137) आमीन

रात का गीत (18 जनवरी)

रोमियो 8:10 और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।

दिव्य दृष्टिकोण से शरीर को मरा हुआ मान लिया जाता है, लेकिन आत्मा या मन को जीवित माना जाता है। यह नई सृष्टि है जिसे परमेश्वर पहचानते हैं, जिसके लिए वे नियत समय यानि पहले पुनरुत्थान में, एक नई आत्मिक देह देने का उद्देश्य रखते हैं। यह आवश्यक है कि इस विचार को हमारे मन में स्पष्ट रूप से पक्का किया जाए, ताकि हम लगातार परमेश्वर के प्रति अपने मेल और मसीह में हमारे प्रति उनके अनुग्रह और सहानुभूति को महसूस कर सकें। यदि हम इस तथ्य से दृष्टि खो देते हैं, कि परमेश्वर हमें इच्छा के दृष्टिकोण से मानते हैं; यदि हम अपने आप को परमेश्वर की ओर से शरीर के अनुसार आंकने लगें, तो हम निश्चित रूप से उसी अनुपात में अंधकार और भ्रम और निराशा में चले जायेंगे। लेकिन आइये, हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि दूसरी तरफ, आत्मा, या इच्छा को उसकी धार्मिकता के कारण जीवित माना जाता है, क्योंकि यह परमेश्वर के साथ तालमेल में है। इसलिए, आइये कभी भी, हमारे जीवन के आचरण को नियंत्रित करने की इच्छा, या इरादे के संदर्भ में हमें सुस्त नहीं होना चाहिए, लेकिन याद रखें कि किसी भी ढिलाई का अर्थ उसी अनुपात में आत्मिक जीवन का नुकसान होगा। सही करने की इच्छा करना हमेशा हमारे लिए संभव है, और एक बिल्कुल वफ़ादारी से भरी इच्छा से कम, कुछ भी मसीह में परमेश्वर के लिए ग्रहणयोग्य नहीं हो सकता है। `Z'03-171` R3203:2 (Hymn 277) आमीन

रात का गीत (19 जनवरी)

नीतिवचन 17:17 मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।

बुद्धिमान व्यक्ति ने ठीक ही कहा है कि मित्र हर समय प्रेम करता है। वह जो केवल एक समय में - जब वह सोचता है कि प्रेम करने से उसका लाभ होगा, प्रेम करता है, तो वह प्रेम नहीं जानता। वह जो प्रेम करता है और केवल समृद्धि में भाई बनता है, और जिसका प्रेम और मित्रता, ताड़ना और प्रतिकूलता की गर्मी के तहत मुरझा जाती है, उसने कभी भी सच्चे अर्थों में प्रेम को नहीं जाना है, उसका प्रेम केवल स्वार्थ की कोई एक छाप है - यह दुनिया का प्रेम है। जैसा कि परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम को भेजा और हमें इस प्रेम को स्वार्थ के माध्यम से नहीं, बल्कि उदारता से दिखाया, खुद के लिए एक बड़ी कीमत पर (अपने एकलौते पुत्र को बलिदान करके परमेश्वर ने अपने प्रेम को हमें दिखाया है), उन्होंने हमें पाप और मृत्युदण्ड के बंदीगृह से रिहा कर दिया, और हमें पुत्रत्व के विशेषाधिकार दिए, उसी प्रकार सच्चा प्रेम हमेशा बलिदान करने के लिए तैयार होगा। आइए हम दूसरों के लिए, प्रभु के लिए, भाइयों के लिए, अपने परिवारों के लिए, अपने पड़ोसियों के लिए, अपने शत्रुओं के लिए, अपने प्रेम का न्याय, उनके हित में और उनके सर्वोच्च कल्याण

के लिए बलिदान करने की हमारी इच्छा के द्वारा करें। `Z'08-248` R4224:5 (Hymn 23) आमीन

रात का गीत (20 जनवरी)

1 पतरस 4:16 पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्ज़ित न हो।

प्रेरित अपने कष्टों से लज्जित नहीं थे, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि था कि वे इन दुखों को मसीह के लिए सह रहे थे। कोई भी पुरुष या महिला एक सार्वजनिक गिरफ्तारी और कानून के उल्लंघनकर्ता के रूप में, एक अपराधी के रूप में कारावास की सजा मिलने पर, गहरा दर्द महसूस करेगा और उसे करना भी चाहिए। लेकिन जब हमें इन चीजों का अनुभव होता है, और हम यह महसूस कर सकते हैं कि ये अनुभव, प्रभु के प्रति हमारी विश्वसनीयता और उनके पदचिन्हों पर चलने के कारण हमपर आ रहे हैं, तब हम निरादर में भी आनन्दित हो सकते हैं, उन अनुभवों में भी आनंद कर सकते हैं जो अन्यथा शर्मनाक और घृणित होते। इसलिए, यदि, प्रभु के प्रावधान के अंतर्गत, इस लेख को पढ़नेवालों में से किसी के ऊपर गिरफ्तारी या कारावास या कोड़े पड़ने के अनुभव आयें, और यदि वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने क्लेशों को प्रभु के प्रति अपनी विश्वसनीयता से जोड़ सकें, तो उन्हें लज्जित महसूस नहीं करना चाहिए; उन्हें इन कलेशों के बदले परमेश्वर को महिमा देनी चाहिए, और उन्हें इस बात से आनंदित होना चाहिए की वे प्रभु यीशु के नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे, और यह याद करना चाहिए की हमारे प्रभु यीशु के साथ भी ऐसे ही अनुभव हुए थे। प्रभु यीशु को बंदीगृह में डाला गया था; उन्हें पकड़कर बांधा गया था; उनको कोड़े पड़े थे; सार्वजनिक रूप से उनका तिरस्कार

किया गया था; यहाँ तक की उन्हें परमेश्वर के निंदक के रूप में सूली पर भी चढ़ा दिया गया था। `Z'03-140` R3189:6 (Hymn 13) आमीन

रात का गीत (21 जनवरी)

1 पतरस 3:12 क्योंकि प्रभु की आंखे धमिर्यों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उन की बिनती की ओर लगे रहते हैं।

हमारे स्वर्गीय पिता को हर उस चीज़ में गहरी दिलचस्पी है जो हमसे से जुड़ी है और हमारी है। जो हमारे सिर के बालों को भी गिनते हैं, उनके ध्यान के लिये कौन सी बात बहुत छोटी है?... यद्यपि हम जिस श्रेष्ठ स्तर पर बनाये गये थे, उससे पाप में गिरे हुए प्राणी हैं, फिर भी, जब हम पापी ही थे, तब परमेश्वर ने मानवजाती से इतना प्रेम किया, कि एक बड़ी कीमत पर हमारे लिये छुटकारे और सुधार और बाद में अनंत महिमा का प्रबंध किया है। और इसलिए यह है - क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं - कि वह हम पर एक पिता के बच्चों के रूप में, उनके पास मसीह के माध्यम से आने का कृपालु उपकार करते हैं ... हमें इस बात का कोई भय नहीं होना चाहिए, कि परमेश्वर अधिक महत्वपूर्ण अन्य मामलों में बहुत व्यस्त हैं, या यह कि वह कम महत्वपूर्ण छोटी - छोटी बातों के लिए, हमारे उनके पास बार - बार जाने से ऊब जायेंगे ... अपनी कोठरी में जाकर; और द्वार बन्द कर के, अपने पिता से प्रार्थना करना हमारा विशेष

अधिकार है; और तब हमारे पिता जो गुप्त में देखते हैं, हमें खुले में प्रतिफल देंगें। `Z'95-213` R1865:5; 1864:3; 1865:4 (Hymn 293) आमीन

रात का गीत (22 जनवरी)

गलातियों 5:13 प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।

आइये हम दूसरों के लिए, प्रभु के लिए, भाइयों के लिए, हमारे परिवारों के लिए, हमारे पड़ोसियों के लिए, यहां तक कि हमारे दुश्मनों के लिए, हमारे प्रेम को, उनके हित और उनके सर्वोच्च कल्याण के लिए बलिदान करने की इच्छा से परखें। अगर हम अपने आप को प्रभु के कारणों के हित में कुछ भी बलिदान नहीं करते हुए पायें , तो हमें यह कहकर अपने आप को भ्रम में नहीं रखना चाहिए, कि हम प्रभु से प्रेम करते हैं। अगर हम अपने आप को सहनशील और भाइयों और दूसरों के हित में बलिदान करने के लिए तैयार नहीं पाते हैं, तो आइए हम इस मामले को गलत न समझें और इसे प्रेम न कहें। यदि हम जरूरत पड़ने पर अपने शत्रुओं पर भी दया करने के लिए खुद को अनिच्छुक पाते हैं, तो हमें कोई गलती नहीं करनी चाहिए; क्योंकि प्रभु ने घोषणा की है, कि भलाई और करुणा

और अपने आप से इंकार करने का मार्ग ही प्रेम से भरे हृदय का एकमात्र सूचकांक (Index) है। `Z'08-249` R4224:5 (Hymn 23) आमीन

रात का गीत (23 जनवरी)

प्रेरितों 2:42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

परमेश्वर के सारे लोग, दिव्य देखभाल के अंदर, "राज - पदधारी याजकों के समाज" की तरह , “स्वर्गीय स्थानों” में यानि छाया के तम्बू के “पवित्र” स्थान में, “एक साथ मिलकर बैठे हुये”, आपस में प्रेम में, और संगति रखने में मिल जुलकर रह सकते हैं। जहां तक हमारे सांसारिक निवास का सवाल है, हम आज सुविधाजनक रेलवे और मेल सेवाओं के आधार पर तुलनात्मक रूप से निकटता से रह सकते हैं। इसीलिए, यह हम सबके लिये लाभदायक होगा, जैसा की मलाकी 3:16 वचन में भविष्यद्वक्ता ने कहा है, कि हम अक्सर "आपस में बातें" करें, और प्रभु ध्यान से हमारी बातों को सुनेंगे और एक दूसरे से मिली आशीष को सफल करेंगे। और हम यह सुझाव देते हैं कि, यदि हम ऐसे निवास स्थानों की तलाश करते हैं, जो विश्वास के घराने के साथ हमारे परस्पर मेलजोल में मदद करेंगे, तो यह इब्रानियों 12:13 वचन में मिले आदेश, "अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए" की आंशिक पूर्ति होगी। आइये हम अपनी सारी गणना और हिसाब में, पहले स्थान पर परमेश्वर को रखें, और मसीहियों के साथ संगती और अनुग्रह में बढ़ने को दूसरे स्थान पर रखें, और इन दोनों को धन से पहले रखें। इस प्रकार से, हम सबसे पहले परमेश्वर के

राज्य और उनके धर्म की खोज सर्वोत्तम तरीके से कर पायेंगें, और नई सृष्टि के रूप में जो भी हमारी असली आवश्यकता होगी, उसके अनुसार परमेश्वर उन सब की पूर्ति करते रहेंगें। `Z'07-345` R4090:5 (Hymn 97) आमीन

रात का गीत (24 जनवरी)

2 शमूएल 5:10 और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता था।

राजा बनने के लिये अभिषेक होने के बाद, उस राज्य के लिये दाऊद ने इंतजार किया और उनके इन अनुभवों में उन्होंने जो सबक सीखे और चरित्र की उन्नति की, और जिस प्रकार से इन तैयारियों ने दाऊद को और अधिक बुद्धिमान और संयमित बनाया - यह सब एक बड़े सबक के उदाहरण के रूप में सुसमाचार युग की कलीसिया की सहायता करते हैं। हमें भी प्रभु के सिंहासन पर बैठने के लिए बुलाया गया है - उनके नाम पर प्रभुता करने के लिए। पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के कार्यालय के लिये हमारा भी अभिषेक किया गया है, जो की प्रेरितों की घोषणा के अनुसार, मुकुट पहनने का दिन आनेपर मिलने वाली महिमा और आनंद के स्वाद की खुशबु है, जिसका अनुभव हम अभी अपने अभिषेक के बाद से करते हैं। यदि दाऊद को प्रभु के लोगों पर राजा बनाने के लिये और सरकार में उनका उचित प्रतिनिधित्व करने के लिये, अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, विश्वास, संयम और आशा सभी आवश्यक थे, तो हमारे लिये कितना अधिक कठोर सबक होना चाहिए, जिन्हें अधिक उच्चतम स्थान - परमेश्वर के प्रतिनिधियों के रूप में पृथ्वी के सिहाँसन पर राज्य करने के लिये और राज - पदधारी याजकों का समाज बनने के लिये बुलाया गया है। ताकि

हम दुनिया के लोगों पर प्रभुता करें, उनका न्याय करें और उनको इस इरादे से परखें, की उन्हें उनकी गिरी हुई अवस्था से छुड़ाया जा सके और परमेश्वर के साथ पूरी तरह से उनको तालमेल में लाया जा सके। `Z'08-268` R4236:1 (Hymn 300) आमीन

रात का गीत (25 जनवरी)

नीतिवचन 10:22 धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दु:ख नहीं मिलाता।

जिसके पास भी परमेश्वर की आशीष है वह वास्तव में धनी है, फिर चाहे उसके पास इस दुनिया की वस्तुएँ कितनी ही कम या अधिक मात्रा में हो। अगर यह सुख सुविधाएँ की वस्तु शांति, आनंद और खुशी नहीं लाती है, तो क्रोएसुस जो की लयदिआ का राजा था और बहुत धनी था, उसकी सारी सम्पति भी हमारे पास हो तो उसका कोई मूल्य नहीं है। हम जहां भी जाते हैं, - धनी और गरीब दोनों लोगों को पाते हैं- जो की आनन्द और ख़ुशी की तलाश में हैं; लेकिन इनमें से कितने कम हैं जो उस आनन्द और ख़ुशी को पाते हैं! अफसोस! दुनिया के लोगों के लिये इस महान तथ्य को समझना असंभव लगता है कि, प्रभु की आशीष सदा के लिए बने रहने वाला धन और सुख का सच्चा भण्डार है - इस आषीश का मूल्य अभी के जीवन से भी अधिक है और आने वाले जीवन से भी अधिक है! जिन लोगों को प्रभु अपने वादों और उनके अनुग्रह के द्वारा धनी करते हैं, उनके मार्गदर्शन और आशीष से समृद्ध बनाते हैं, उनके पास वो खुशी है, जिसको दूसरे व्यर्थ में खोज रहे हैं। इस सुसमाचार

के युग के दौरान यह सच्चा धन जो की परमेश्वर के वादे और अनुग्रह हैं, उन सभी को प्राप्त होते हैं जिनके पास "सुनने के कान" हैं, और जो मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह का पाठ सीखते हैं। मसीह में दिव्य ज्ञान, प्रेम, और शक्ति के सभी खजाने छिपे हुए हैं। `Z'13-30` R5171:1(Hymn 179) आमीन

रात का गीत (26 जनवरी)

भजन संहिता 89:34 मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।

यहोवा परमेश्वर के ये शब्द उनके वफादार बच्चों को बहुत दिलासा और तसल्ली देते हैं। जैसा कि, विश्वास आशा की गई चीजों के लिए एक आधार बन जाता है, उसी प्रकार, भरोसा और अनुभव मिलकर विश्वास को आराम देने के लिए एक आधार बनाते हैं। हमारे परमेश्वर का अपरिवर्तनीय रहना उनके चरित्र की आकर्षक विशेषताओं में से एक है: मलाकी 3:6 वचन में उनका आश्वासन है कि "मैं यहोवा बदलता नहीं"। यहां तक कि, जब प्रभु का शब्द या वाक्य हमारे विरुद्ध हो - जैसे की पाप और पापियों के विरुद्ध उनके दंड के सम्बन्ध में - और भले ही उनका अपरिवर्तनीय चरित्र उन्हें पाप को क्षमा न करने दे या दोषी को निष्कलंक न ठहराए, उनके अपरिवर्तनीय चरित्र की यही स्थिरता हमारे

लिये यह आश्वासन बन जाती है, कि जब परमेश्वर दंड के संबंध में सख्त और अपरिवर्तनीय रहे हैं, तो वह सभी अच्छे वादों और वाचाओं के बारे में, जो उन्होंने हमसे की है, समान रूप से सख्त और समान रूप से अपरिवर्तनीय रहेंगे। `Z'02-342` R3107:3 (Hymn 219) आमीन

रात का गीत (27 जनवरी)

यूहन्ना 14:16 और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

प्रभु के द्वारा उपयोग में लिये जाने और परमेश्वर के परिवार में पवित्र आत्मा से उत्पन्न होकर गोद लिये जाने के द्वारा प्रभु के लोगों के पास क्या संतुष्टि और क्या आराम है! लेपालकपन की पवित्र आत्मा, पवित्र आत्मा का अभिषेक, पवित्र प्रभाव , पिता और पुत्र की आशीष, हमारे निर्णय का मार्गदर्शन करते हैं, हमारे मन का मार्गदर्शन करते हैं, हमें पवित्र शास्त्र का अर्थ समझाते हैं, जिससे हमारे मन में उत्तेजना उत्पन्न होती है, और हमारे पिता के उद्धार की महिमामय योजना की लम्बाई और चौड़ाई और ऊँचाई और गहराई की हम अधिक सराहना कर पाते हैं, जो की हमारे लिये भी है, और पृथ्वी के सभी परिवारों के लिये भी है। सचमुच, जैसा की हमारे प्रभु ने कहा था, पवित्र आत्मा हमें आनेवाली बातें बताएगा, और जो बीत चुकी हैं उनको समझायेगा। आनेवाली बातों की

सराहना के तौर पर हमारे पास कितनी सारी आशीषें हैं - हजार वर्ष का राज्य, सुधार का समय, पृथ्वी के सभी परिवारों का उत्थान और उन्हें मजबूत बनाने का कार्य! `Z'08-139` R4166:6 (Hymn 91) आमीन

रात का गीत (28 जनवरी)

रोमियो 8:22 क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।

समर्पित घराने के प्रियों, आइये हम, पीड़ाओं में पड़ी तड़पती सृष्टि से संपर्क में रहना; उसके पीड़ाओं और दुखों के प्रति सहानुभूति रखना; उनकी गहरी गिरावट और दुख का एहसास करना न भूलें; इनकी कमजोरियों, इनके वंशानुगत दोषों के परिणामस्वरूप कमजोरियों के भयानक बोझ, उनके अज्ञानता और अंधविश्वास के अपने वर्तमान वातावरण और लोगों के बीच लम्बे समय से स्थापित गलत उपदेश को याद रखें; ये याद रखते हुए की हम भी पापी देह में हैं; और यदि सब दिशाओं में नहीं, तो कम से कम कुछ दिशाओं में पाप सक्रिय रूप से अभी भी हममें प्रगट होता है। और जैसे कराहती हुई सृष्टि की पुकार, मजबूत और दयनीय याचना के साथ, सेनाओं के यहोवा के कानों तक और उनके प्रेम से भरे हृदय तक पहुँचती है, वैसे ही उनकी पुकार को हमारे कानों तक भी आने दें और

हमारी सहानुभूति ग्रहण करने दें , और अपने स्वर्गीय पिता के धार्मिकता और शांति के राज्य की स्थापना के लिए, हमारे स्वर्गीय पिता की योजना में सहयोग करने के लिए हम अपने उत्साह को बढ़ाएं। `Z'02-263` R3067:6 (Hymn 38) आमीन

रात का गीत (29 जनवरी)

निर्गमन 15:2 यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है।

प्रभु हमारा बल हैं; हमें मनुष्यों की सामर्थ्य पर निर्भर नहीं करना है - न तो अपनी और न ही दूसरे मनुष्यों की। हमने प्रभु को जो हमारा सिर हैं पकड़ा है, जिनसे न केवल वे नियम आते हैं, जो हमें नियंत्रित करते हैं, बल्कि जिनसे ताकत, मार्गदर्शन, सुरक्षा, देखभाल आदि सभी आते हैं, जिनकी हमें आवश्यकता होती है और जिनका हम आनंद लेते हैं। प्रभु हमारा उद्धार ठहरे हैं; उनके लहू पर विश्वास के द्वारा उन्होंने हमें पाप के दोष से बचाया है; उन्होंने हमें पाप के प्रति प्रेम से बचाया है। उसने हमें न केवल पुनर्जीवित किया है, बल्कि हमें मजबूत बनाया है, और हमें सकेत मार्ग में चलने और ऐसा आनंदित और मगन होकर छलांगे मारते हुए करने में सक्षम किया है। वह पहले से ही हमारा उद्धार हैं - उद्धार

जो हमारे पास लाया जाना है, और पहले पुनरुत्थान में जिस उद्धार को हममें पूरा होना है - उसका आरम्भ अभी से हो चूका है - क्योंकि हम अभी से ही मृत्य को पार करके जीवन में प्रवेश कर चुके हैं , और इसकी गवाही हमने पवित्र आत्मा में पायी है। `Z'02-10` R2934:4 (Hymn 120) आमीन

रात का गीत (30 जनवरी)

कुलुस्सियों 3:15 और मसीह की शान्ति...तुम्हारे हृदय में राज्य करे...।

शान्ति और आनन्द जो सारी समझ से परे है, इसे संसार को नहीं दिया गया है, और न ही नाम के इसाईयों को, जो प्रचारक हैं उन्हें दिया गया है, न ही रीतिवादियों को और न ही रूढ़िवादियों को, फिर चाहे वे कितने भी जोशीले क्यों न हो। यह शान्ति और आनन्द केवल उन्हीं लोगों के लिए है या हो सकता है, जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा अनुग्रह के धन को पाया है--ये वे लोग हैं जो सत्य और सत्य की आत्मा के प्रति आज्ञाकारी रहकर मसीह, में बढ़ते जाते हैं जो उनका सभी मामलों में जीवित सिर है। इन्हीं लोगों के पास गहरी और सदा बनी रहने वाली शान्ति होती है, और जिस अनुपात में वे विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा सभी संतों के साथ मिलकर दिव्य अनुग्रह के धन -- यानि परमेश्वर के प्रेम की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई को समझते जाते हैं; उसी अनुपात में यह शान्ति सदा उनमें बढ़ती जाती है। Z'99-93` R2456:6 (Hymn 244) आमीन

रात का गीत (31 जनवरी)

यशायाह 43:2 जब तू जल में हो कर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में हो कर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी...।

इस तथ्य के दृश्य में कि सभी, जो बुलाए हुए, चुने हुए, और विश्वासी हैं, उन सब के लिए यह जरुरी है कि, वे अनुभव, अनुशासन और परिक्षा की पाठशाला से होकर गुजरें, इस नजरिये से की तभी उनको अंतिम स्वीकृति मिलेगी। यह जानना कितना उत्साहजनक है कि प्रभु वास्तव में हमारे हर मुसीबत में हमारे साथ होंगे, कि प्रभु हमारे सभी क्लेशों, कठिनाइयों , कष्टों, जटिलताओं आदि में हमारे साथ सहानुभूति रखते हैं, और यह कि "परमेश्वर के प्रावधान में आये असंतोषजनक अनुभवों के पीछे उनका एक मुस्कुराता हुआ चेहरा छिपा है "। दुःख, निराशा, चंचलता, परेशानी की धाराएँ हमारे जीवन में होगी, लेकिन हमें इस परिथिति में इन पीड़ाओं के साथ बह नहीं जाना है, बल्कि अच्छे सैनिकों के रूप में कठोरता को सहते रहना है। लेकिन जीवन के इन दुखों की धारा से हमें झुझते रहना है, और इसका सामना करने का बल का जो स्त्रोत है उनको -यानि प्रभु को नहीं भूलना है- प्रभु हमको दूसरी ओर सुरक्षित खींच लेंगे, जहां हमको जीवन मिलेगा, और वह भी ज्यादा मात्रा में, महिमा, आदर और अमरता के साथ, जो प्रभु अपनी दुल्हन के लिए प्रदान करेंगे - उनके चुने हुओं के लिए। `Z'07-171` R4005:1 (Hymn 93) आमीन